Information of Press Council of Maharashtra

ISSN NO. (Online/E-Journal): 3139-499X | Vol. 1 | Issue 2, April to June 2026

Article 3 | Language: Hindi | Published: April to June 2026

भारत में चुनावों में ओपिनियन पोल और एक्ज़िट पोल का बढ़ता प्रभाव : मीडिया की अहम भूमिका

Adv. Akramkhan Abdulmajeedkhan Pathan

ABSTRACT

यह लेख भारत में चुनावों के दौरान ओपिनियन पोल और एक्ज़िट पोल के बढ़ते प्रभाव तथा उसमें मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि ये सर्वेक्षण मतदाताओं के व्यवहार, चुनावी रणनीतियों और जनमत निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

ओपिनियन पोल चुनाव पूर्व मतदाताओं के रुझानों को दर्शाते हैं, जबकि एक्ज़िट पोल मतदान के बाद संभावित परिणामों का अनुमान प्रस्तुत करते हैं। लेख में इन पोल्स के मनोवैज्ञानिक प्रभावों—जैसे Bandwagon Effect और Underdog Effect—का विश्लेषण किया गया है।

साथ ही, मीडिया की भूमिका, कानूनी नियंत्रण तथा Election Commission of India के दिशा-निर्देशों का भी अध्ययन किया गया है। डिजिटल और सोशल मीडिया के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, यह लेख निष्कर्ष निकालता है कि इन पोल्स का जिम्मेदार और पारदर्शी उपयोग लोकतंत्र को सुदृढ़ बना सकता है।

<h2 style="text-align: left;">प्रस्तावना</h2>

<p>भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ चुनाव केवल प्रतिनिधियों के चयन की एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक भागीदारी का एक व्यापक उत्सव है। लगभग 90 <span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times

New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">करोड़ से अधिक मतदाताओं की भागीदारी के साथ, भारतीय चुनाव वैश्विक स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।</p>
<p>समय के साथ चुनावी परिदृश्य में तकनीकी विकास, मीडिया विस्तार और डेटा विश्लेषण के बढ़ते उपयोग ने कई परिवर्तन किए हैं। इन परिवर्तनों में ओपिनियन पोल (Opinion Poll) और एक्ज़िट पोल (Exit Poll) का उभरता प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है।</p>
<p>आज के सूचना-प्रधान और डिजिटल युग में ये पोल केवल रुझान दर्शाने तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे राजनीतिक विमर्श को दिशा देने, मतदाताओं की धारणा बनाने और चुनावी रणनीतियों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण उपकरण बन चुके हैं। इस पूरे परिदृश्य में मीडिया की भूमिका एक सेतु (bridge) के रूप में उभरती है, जो सूचना, विश्लेषण और जनमत के बीच संबंध स्थापित करती है।</p>
<h2 style="text-align: left;">ओपिनियन पोल और एक्ज़िट पोल की अवधारणा</h2>
<p><span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family:

'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">ओपिनियन पोल एक प्रकार का वैज्ञानिक सर्वेक्षण होता है, जो चुनाव से पहले मतदाताओं की प्राथमिकताओं, मुद्दों और संभावित मतदान व्यवहार का आकलन करता है। यह सर्वेक्षण सैंपलिंग तकनीक, प्रश्नावली, सांख्यिकीय विश्लेषण और जनसांख्यिकीय (demographic) डेटा के आधार पर तैयार किया जाता है।</p>
<p>इसके विपरीत, एक्ज़िट पोल मतदान के दिन या मतदान समाप्त होने के तुरंत बाद किया जाता है, जिसमें मतदान केंद्र से बाहर निकलने वाले मतदाताओं से उनकी पसंद के बारे में जानकारी ली जाती है।</p>
<p>इन दोनों प्रकार के पोल्स का मुख्य उद्देश्य चुनाव परिणामों का पूर्वानुमान प्रस्तुत करना होता है, लेकिन यह ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है कि ये केवल अनुमान (estimates) होते हैं, न कि वास्तविक परिणाम।</p>

<p>इसके अतिरिक्त, इन सर्वेक्षणों की सटीकता कई कारकों पर निर्भर करती है—जैसे सैंपल साइज, क्षेत्रीय विविधता, प्रश्नों की संरचना और उत्तरदाताओं की ईमानदारी। यदि इन कारकों में त्रुटि होती है, तो परिणाम भी भ्रामक हो सकते हैं।</p>

<h2 style="text-align: left;">चुनावी प्रक्रिया में बढ़ता प्रभाव</h2>

<p>पिछले एक दशक में ओपिनियन और एक्ज़िट पोल का प्रभाव अत्यंत तेजी से बढ़ा है। इसका मुख्य कारण 24x7 न्यूज चैनलों का प्रसार, डिजिटल मीडिया का विस्तार और स्मार्टफोन के माध्यम से सूचना तक आसान पहुँच है।</p>

<p>आज चुनाव के दौरान टीवी डिबेट्स, डिजिटल प्लेटफॉर्म, और सोशल मीडिया पर इन पोल्स की व्यापक चर्चा होती है। इससे ये सर्वेक्षण आम जनता के बीच एक प्रमुख संवाद (public discourse) <span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode

MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">का हिस्सा बन जाते हैं।</p>
<p>इनका प्रभाव कई स्तरों पर देखा जा सकता है:</p>
<ul type="disc">
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">राजनीतिक रणनीति: राजनीतिक दल इन पोल्स के आधार पर अपने उम्मीदवारों का चयन, प्रचार अभियान और मुद्दों की प्राथमिकता तय करते हैं।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">मीडिया एजेंडा: मीडिया इन पोल्स को प्रमुखता देकर चुनावी विमर्श की दिशा तय करता है, जिससे कुछ मुद्दे उभरते हैं और कुछ हाशिए पर चले जाते हैं।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;"><span lang="MR"

style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin;">जन धारणा निर्माण: आम मतदाता इन सर्वेक्षणों को देखकर अपने निर्णय को प्रभावित कर सकता है, विशेषकर तब जब वह पहले से अनिर्णीत (undecided) हो।

<p>इस प्रकार, ये पोल चुनावी प्रक्रिया का एक सक्रिय और प्रभावशाली हिस्सा बन चुके हैं।</p>

<h2 style="text-align: left;">मतदाताओं के व्यवहार पर प्रभाव</h2>

<p>ओपिनियन और एक्ज़िट पोल केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे मतदाताओं के मनोवैज्ञानिक व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं।</p>

<ul type="disc">

<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">Bandwagon Effect: <span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-

family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin;">जब किसी पार्टी को सर्वेक्षणों में आगे दिखाया जाता है, तो कुछ मतदाता “विजेता” के साथ जुड़ने की प्रवृत्ति रखते हैं।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">Underdog Effect: इसके विपरीत, कुछ मतदाता कमजोर मानी जा रही पार्टी के प्रति सहानुभूति विकसित कर उसे समर्थन देते हैं।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">Spiral of Silence: कई बार लोग बहुमत के विपरीत अपनी राय व्यक्त करने से बचते हैं, <span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font:

minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin;">जिससे वास्तविक जनमत छिप सकता है।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">मतदान व्यवहार में बदलाव: यदि मतदाता यह मान ले कि परिणाम पहले से तय है, तो वह मतदान के प्रति उदासीन हो सकता है, जिससे मतदान प्रतिशत प्रभावित होता है।

<p>इस प्रकार, ये पोल लोकतांत्रिक प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप का कार्य करते हैं, जो कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।</p>
<h2 style="text-align: left;">मीडिया की केंद्रीय भूमिका</h2>
<p>मीडिया ओपिनियन और एक्ज़िट पोल के प्रसारण, <span lang="MR" style="font-

family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">विश्लेषण और व्याख्या में केंद्रीय भूमिका निभाता है। इसकी जिम्मेदारी केवल डेटा प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उसे संदर्भ के साथ, निष्पक्ष और संतुलित तरीके से जनता तक पहुँचाना भी है।</p>
<h3>1. सूचना का सरलीकरण</h3>
<p>मीडिया जटिल आंकड़ों को ग्राफिक्स, इन्फोग्राफिक्स, चार्ट और डेटा विज़ुअलाइजेशन के माध्यम से सरल बनाता है। इससे आम नागरिक भी चुनावी रुझानों को आसानी से समझ पाता है।</p>
<h3>2. एजेंडा सेटिंग</h3>
<p>मीडिया यह तय करता है कि किन मुद्दों और पोल्स को प्रमुखता दी जाए। कई बार यह चयन जनमत को प्रभावित करता है, <span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-

hansi-font-family: 'Times New Roman';">जिससे चुनावी चर्चा की दिशा बदल सकती है।</p>
<h3>3.
विश्लेषण और व्याख्या</h3>
<p>विशेषज्ञों, पॉलिटिकल एनालिस्ट और डेटा वैज्ञानिकों के माध्यम से मीडिया इन पोल्स की गहन व्याख्या प्रस्तुत करता है, जिससे दर्शकों को व्यापक दृष्टिकोण मिलता है।</p>
<h3>4.
जवाबदेही और पारदर्शिता</h3>
<p>मीडिया संस्थानों को यह स्पष्ट करना चाहिए कि सर्वेक्षण कैसे किया गया, सैंपल साइज क्या था, और उसकी सीमाएँ क्या हैं। पारदर्शिता से विश्वसनीयता बढ़ती है।</p>
<h2 style="text-align: left;">कानूनी और नियामक पहलू</h2>
<p><span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family:

'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">भारत में ओपिनियन और एक्ज़िट पोल के प्रसारण को नियंत्रित करने के लिए स्पष्ट नियम बनाए गए हैं। Election Commission of India यह सुनिश्चित करता है कि मतदान प्रक्रिया की निष्पक्षता बनी रहे।</p>
<p>भारतीय कानून के अनुसार, मतदान के दौरान एक निश्चित अवधि तक एक्ज़िट पोल के प्रसारण पर प्रतिबंध लगाया जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मतदाता किसी पूर्वानुमान से प्रभावित न हों।</p>
<p>इसके अलावा, मीडिया और सर्वे एजेंसियों को नैतिक मानकों का पालन करना आवश्यक होता है—<span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; line-height: 115%; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri;

mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin; mso-ansi-language: EN-IN; mso-fareast-language: EN-US; mso-bidi-language: MR;">जैसे निष्पक्षता, सटीकता, पारदर्शिता और जवाबदेही। प्रेस काउंसिल के दिशा-निर्देश भी मीडिया आचरण को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।</p>
<h2 style="text-align: left;">चुनौतियाँ और आलोचनाएँ</h2>
<p>हालाँकि ओपिनियन और एक्ज़िट पोल उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं, लेकिन इनके साथ कई चुनौतियाँ और आलोचनाएँ भी जुड़ी हुई हैं:</p>
<ul type="disc">
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">सटीकता की समस्या: <span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-

font-size: 11.0pt; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin;">कई बार ये पोल वास्तविक परिणामों से काफी भिन्न होते हैं, जिससे इनकी विश्वसनीयता पर प्रश्न उठता है।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">पक्षपात का आरोप: कुछ सर्वेक्षणों पर राजनीतिक झुकाव (bias) का आरोप लगाया जाता है।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">पद्धति की पारदर्शिता का अभाव: सैंपल साइज, क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व और डेटा संग्रहण की प्रक्रिया स्पष्ट नहीं होती।
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-

height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">ओवर-इंटरप्रिटेशन: मीडिया कई बार सीमित डेटा को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है।

<p>इन सभी कारणों से यह आवश्यक हो जाता है कि इन पोल्स को सावधानीपूर्वक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए।</p>
<h2 style="text-align: left;">डिजिटल युग और सोशल मीडिया का प्रभाव</h2>
<p>डिजिटल क्रांति ने ओपिनियन और एक्ज़िट पोल के प्रभाव को कई गुना बढ़ा दिया है। आज Facebook, X और YouTube जैसे प्लेटफॉर्म इन सर्वेक्षणों को तेजी से फैलाते हैं।</p>
<ul type="disc">
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">फेक न्यूज और अप्रमाणित पोल्स तेजी से वायरल हो जाते हैं
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">“DIY Polls” (<span

lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin;">स्वयं द्वारा बनाए गए सर्वे) आम हो गए हैं
<li class="MsoNormal" style="mso-margin-top-alt: auto; mso-margin-bottom-alt: auto; line-height: normal; mso-list: l0 level1 lfo1; tab-stops: list 36.0pt;">एल्गोरिदम आधारित कंटेंट लोगों को केवल उनकी पसंद के अनुरूप जानकारी दिखाता है (Echo Chamber Effect)

<p>यह स्थिति लोकतंत्र के लिए एक नई चुनौती प्रस्तुत करती है, क्योंकि इससे गलत सूचना (misinformation) और दुष्प्रचार (disinformation) का खतरा बढ़ जाता है।</p>
<h2 style="text-align: left;">निष्कर्ष</h2>
<p>ओपिनियन पोल और एक्ज़िट पोल आज भारतीय चुनावी प्रणाली का एक अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। ये मतदाताओं को सूचना प्रदान करने के साथ-साथ चुनावी माहौल और जनमत को प्रभावित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।</p>
<p>ऐसे में मीडिया की जिम्मेदारी अत्यधिक बढ़ जाती है। यदि मीडिया निष्पक्षता, पारदर्शिता और नैतिकता का पालन करता है, <span lang="MR" style="font-family:

'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">तो ये पोल लोकतंत्र को मजबूत बनाने में सहायक हो सकते हैं।</p>
<p>परंतु यदि इनका दुरुपयोग किया जाता है या इन्हें भ्रामक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, तो यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर भी कर सकता है।</p>
<p>अतः आवश्यक है कि मीडिया, सर्वे एजेंसियाँ, नियामक संस्थाएँ और मतदाता सभी मिलकर एक जागरूक, जिम्मेदार और पारदर्शी चुनावी वातावरण का निर्माण करें, जिससे भारत का लोकतंत्र और अधिक सशक्त एवं विश्वसनीय बन सके।</p>